चार लाख लोगों की जान भी बचाएगा जल जीवन मिशन

- पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के कहने पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने किया अध्ययन
- मिशन का लक्ष्य पूरा होने पर डायरिया जैसी बीमारियों पर कम खर्च से होगी 101 अरब डालर की बचत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : गांवों में हर घर को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के केंद्र सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम जल जीवन मिशन (जेजेएम) का महत्व एक बार फिर रेखांकित हुआ है। अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इस मिशन को न केवल दुनिया के लिए मिसाल बताया है, बल्कि अपने अध्ययन के जरिये अनुमान व्यक्त किया है कि अगर हर ग्रामीण घर में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति का ढांचा बन गया तो डायरिया के कारण होने वालीं लगभग चार लाख मौतों को टाला जा सकता है। यह पहला अवसर नहीं है जब जेजेएम को अंतरराष्ट्रीय सराहना-सम्मान मिला है। इससे पूर्व नोबेल पुरस्कार विजेता माइकल क्रेमर का फाउंडेशन गांवों में शिशु मृत्यु दर पर अंकुश लगाने में जेजेएम के योगदान पर अपनी रिपोर्ट दे चुका है।

शुक्रवार को एक कार्यक्रम में डब्ल्यूएचओ ने अपने अध्ययन के निष्कर्षों को सार्वजनिक किया। यह अध्ययन पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के कहने पर किया गया है, ताकि स्वास्थ्य एवं समाज के क्षेत्र में जेजेएम के असर को समझा जा सके। डब्ल्यूएचओ ने पाया कि अगर सभी लोगों तक स्वच्छ जल पहुंचता है तो लगभग 101 अरब डालर की बचत होगी क्योंकि डायरिया जैसी बीमारियों पर कम खर्च करना पड़ेगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अब तक 62 प्रतिशत ग्रामीण घरों में नल से जल की आपूर्ति की व्यवस्था हो चुकी है।

अध्ययन के अनुसार, जेजेएम के जरिये डायरिया से लगभग 1.4 करोड़ दिव्यांगता समायोजित जीवन वर्षों (डीएएलवाई) को बचाया जा सकता है। डीएएलवाई की गणना मृत्यु के समय की आयु को अधिकतम संभावित आयु से घटाकर की जाती है।

स्वास्थ्य मोर्चे पर इन लाभों के साथ सामाजिक स्तर पर भी जेजेएम बड़ा असर डालने वाला है। डब्ल्यूएचओ का अध्ययन बताता है कि हर घर नल से जलापूर्ति महिलाओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं, क्योंकि इससे उन्हें पानी की व्यवस्था में जो समय खपाना पड़ता है, उसमें प्रतिदिन 6.66 करोड़ घंटों की बचत होगी। अध्ययन के निष्कर्षों को जलापूर्ति और स्वच्छता से संबंधित डब्ल्यूएचओ व यूनिसेफ के साझा कार्यक्रम के सह-प्रमुख रिचर्ड जांस्टन ने सामने रखा। उन्होंने कहा कि अगर दुनिया को पेयजल और स्वच्छता के संदर्भ में सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करना है तो यह भारत के बलबूते ही होगा। इसके दो कारण हैं- जनसंख्या और आकार। चूंकि, आबादी में भारत दुनिया में सबसे आगे हो गया है, इसलिए जो कुछ भारत में होगा, वह पूरी दुनिया के लिए अहम होगा। भारत दिखा रहा है कि क्या किया जा सकता है। अगर ठान लिया जाए, पूरी प्रतिबद्धता हो और पैसा खर्च करने में संकोच न हो तो कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

nwda.gov.in